कामधेनु घनवटी

वरदान

कामधेनु घनवटी मानव के लिए कामधेनु का वरदान है. राक्षस मानव से पशु मानव, पशु मानव से मानव, मानव से देव मानव, देव मानव से दिव्य मानव के विकास क्रम में कामधेनु घनवटी का योगदान है. आदिदैविक, आध्यात्मिक, आदिभौतिक परिवर्तन मानव के अंदर कामधेनु धनवटी के कारण ही होने लगता है.

गोलोक से कामधेनु

कामधेनु यानी मानव की हर कामना यानी इच्छा की पूर्ति करने वाली धेनु. कामधेनु मानव का उद्धार करने के लिए गोलोक से मृत्युलोक में आयी है.

अमृत

कामधेनु अपना दूध, मूत्र तथा गोमय मानव को अमृत के रुप में देती है. आयुर्वेद में मूत्र का उपयोग कामधेनु घनवटी के लिए भी किया जाता है.

परेशानी

मानव को अक्सर गोमूत्र पीने में अमोनिया की तीव्र गंध के कारण परेशानी होती है. गोमूत्र पीने के बाद में अमोनिया के कारण डकार आती है. यूरिया के कारण गोमूत्र का रंग लाल देखकर भी मन नहीं मानता है.

सर्वश्रे-ठ

महिलाओं को कसैले स्वाद तथा गंध के कारण गोमूत्र पीने पर उलटी होने के कारण ही अर्क, अर्क से तैयार नारी संजीवनी पिलाने का प्रयत्न किया जा रहा है. महिलाएं अर्क तथा नारी संजीवनी पीने के लिए भी तैयार नहीं होती है.

कैप्सूल

महिलाओं के लिए घनवटी ही सर्वश्रे-ठ है. घनवटी में यदि परेशानी है तो घनवटी को कैप्सूल में दिया जा सकता है. घनवटी में गोमूत्र के सभी रसायन मौजूद हैं.

ताजा

महानगरों में रहकर ताजा गोमूत्र प्रतिदिन पीना संभव नहीं है. गोमूत्र ताजा रहने पर ही लाभदायी है. गोमूत्र ताजा ही पीना सर्वश्रे-ठ है. गोमूत्र अधिक समय बाद स्वाद में कसैलापन बढ़ जाने के कारण पीना संभव नहीं है.

सावधानी

गोमूत्र सिर्फ कांच या मिटटी के पात्र में रखना अच्छा है. गोमूत्र को टूट जाने वाले पात्रो में रखकर लाने ले जाने में तकलीफ होती है.

अंतिम उपाय

कलियुग में मृत्युलोक में मानव बहुत से असाध्य रोगों से परेशान है. कामधेनु घनवटी ही अब मानव के लिए अंतिम उपाय है.

100 प्रतिशत गोवंश रक्षा

कामधेनु जीवन भर मानव को मूत्र तथा गोमय देती है. अपार गोमूत्र तथा गोमय का उपयोग मानव कर रहा है. कामधेनु घनवटी में मूत्र तथा गोमय का प्रयोग किया जाता है. घनवटी न पिघले इसके लिए गोमय की भस्म का प्रयोग किया जाता है.

अनुदान नहीं

कामधेनु को अनुदान नहीं अनुसंधान की आवश्यकता है. अनुसंधान के कारण ही वर्तमान में गोमूत्र का उपयोग गो कोला, जड़ीबूटियों के साथ में अलग अलग अर्क, आसव, नारी संजीवनी, बाल पाल रस, प्रमेहारी, नहाने, मालिश करने, एनिमा, पंचगव्य पीने तथा स्नान करने के लिए, आयुर्वेद में शोधन करने के लिए, पंचगव्य एवं महापंचगव्य घी, प्रमेहारी, फिनाइल, फसलरक्षक, घनवटी, गोवंश के उपचार में, बालों के शैंपू जैसी अनेक वस्तुएं बनाने में किया जा रहा है.

गोमूत्र की मांग निरन्तर बढ़ने के कारण ही गोपालक को अपने आप ही बहुत अच्छा मूल्य मिलेगा. कामधेनु घनवटी विश्व स्तर पर युवाओं के द्वारा तैयार करने पर आर्थिक आधार पर 100 प्रतिशत गोवंश रक्षा करना संभव है.

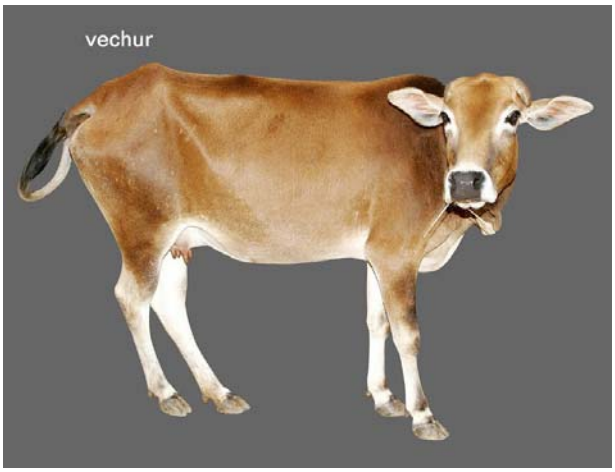

अनुसंधान

विश्व में कामधेनु पर बहुत समय से अनुसंधान किये गये हैं. कामधेनु के चमत्कारिक परिणामों को देखकर गहन अनुसंधान करने के लिए विकसित देशों में कामधेनु विश्वविद्यालय खोले गये हैं. कामधेनु साहित्य का अध्ययन किया गया है.

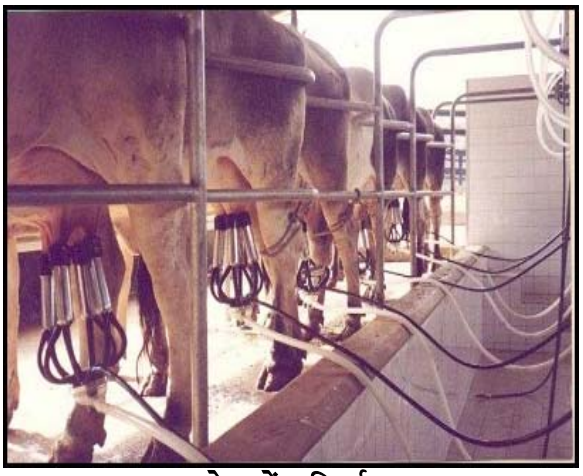

सोच में परिवर्तन

विश्व में कामधेनु के साथ में घनवटी पर निरन्तर बहुत अधिक अनुसंधान किये गये हैं. अनुसंधानों के कारण ही मानव की सोच में बहुत ही तेजी के साथ में परिवर्तन हुआ है. आयुर्वेद में घनवटी का उपयोग बहुत पहले से ही किया जाता है. गोमूत्र से तैयार कामधेनु धनवटी भी चलन में आ जायेगी.

100 साल

एक बात तो स्प-ट है कि आने वाले 100 सालों के समय में मानव कामधेनु घनवटी का ही प्रयोग करना पसंद करेगा.

दिव्य रसायन

घनवटी पूरी तरह से सात्विक, पौि-टक तथा सुपाच्य है. घनवटी में अदभुत दिव्य रसायन मौजूद हैं. घनवटी के नियमित सेवन करने पर मानव सात्विक तथा देवत्व के गुणों वाला हो जाता है.

निरोगी व्यक्ति

निरोगी व्यक्ति भी उत्साह तथा आनन्द के साथ जीवन जीने के लिए अंखड उर्जा के खजाने यानी घनवटी का नियमित सेवन कर सकता है.

निरोगी तथा दीर्घायु

रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होने के कारण ही मानव दीर्घायु तथा पूरी तरह से निरोगी रहता है.

अधिक खनिज

दूध की तुलना में घनवटी में ढाई गुना अधिक खनिज मौजूद हैं. गोमूत्र में 2.1 प्रतिशत खनिज हैं. खनिज हमारे शरीर के लिए अनिवार्य हैं.

सोडियम

अतिसार और वमन शरीर में सोडियम की कमी उत्पन्न होती है. सोडियम के कारण रक्त पूरी तरह से साफ रहता है. सोडियम के कारण शरीर में नाडी विकार नहीं होता है. सोडियम भोजन को पचाने में सहायक होता है.

पोटेशियम

शरीर में पोटेशियम का प्रमुख कार्य कोशिकाओं के आयतन तथा उनके रसाक-र्ाण दाब को स्थिर बनाये रखता है. पोटेशियम शरीर अम्लीय-क्षारीय संतुलन को प्रभावित करता है. साथ ही अनेक उपापचयी प्रक्रियाओं में योग देता है. अंतः तथा बाहय कोशिकीय पोटेशियम आयनों का पारम्परिक अनुपात ही उत्तेजनीय उतकों के झिल्ली-विभव को निर्धारित करता है. कुछ बीमारियों में पोटेशियम के भंडार में कमी आ जाती है. अतिसार और वमन शरीर में सोडियम की कमी एवं जलाभाव के साथ पोटेशियम अभाव की स्थिति उत्पन्न होती है.

अभिवृक्क प्रतिरक्षा पसीने के स्त्राव में हुई वृद्धि भी पोटेशियम अभाव पैदा कर सकती है क्योंकि ये हार्मोन गुर्दो के पोटेशियम स्त्राव दर में वृद्धि करते हैं. उतकों के न-ट होने के कारण भी शरीर को पोटेशियम के अभाव का सामना कर पड़ सकता है. पोटेशियम मांसपेशिओं को काम करने में सहायता करता है. पोटेशियम की कमी से आंतों की पेशियों में विकार उत्पन्न हो सकता है. जब किसी वजह से शरीर का कोई उतक न-ट हो जाता है तो उस उतक की कोशिकाओं का पोटेशियम मूत्र के साथ उत्सर्जित होने लगता है. एक ग्राम कोशिकीय प्रोटीन के न-ट होने पर लगभग 3 मिलीग्राम पोटेशियम मुक्त होता है. रक्त में मौजूद हाइड्रोजन आयनों की सांद्रता में कमी तथा गुर्दजन्य सोडियम आयनों की कमी भी पोटेशियम अभाव पैदा कर सकती है. ऐसा भी हो सकता है कि शरीर में मौजूद कुल पोटेशियम की मात्रा में कमी न आये पर शरीर में पोटेशियम अभाव के लक्षण स्प-ट होने लगे. यह सब उस समय होने लगता है जब बाहय कोशिकीय प्रभाग का पोटेशयम आंतरिक कोशिकीय प्रभाग में सीानातरिक होने लगता है. जब शरीर में पोटेशियम का अभाव होता है तो यह जरुरी नहीं है कि उसका प्रभाव रक्तप्लाज्मा के

पोटेशियम स्तर पर भी पड़े. दरअसल रक्तप्लाज्मा तथा कोशिकीय पोटेशियम के बीच काफी जटल संतुलन रहता है जो अनेक कारणों से प्रभावित हो सकता है. इनमें से एक प्रमुख कारण है रक्त के अम्लीय-क्षारीय संतुलन में गड़बड़ी. अम्ल-रक्तता पोटेशियम को कोशिकाओं से बाहर निकालती है पर खार रक्तता बाहय कोशिकीय पोटेशियम को अन्तः कोशिकीय प्रभाग में भेजती है. अत्यधिक पोटेशियम अभाव हो जाने पर शरीर के अन्तः व बाहय कोशिकीय दोनों ही प्रभागों में पोटेशियम की सांद्रता कम हो जाती है. यद्यपि किसी भी प्रभाग में हुए पोटेशियम हास के कारण शरीर में पोटेशियम अभाव के लक्षण दिखाई देने लगते हैं किंतु दोनों ही प्रभाग में एक साथ होने वाली पोटेशियम अभाव की स्थिति से संबंधित लक्षण शीघ्रता से प्रकट होने लगते हैं. पोटेशियम अभाव से पीड़ित व्यक्ति संभ्रांति का शिकार हो जाता है. वह उदासीनता एवं घबराहट का शिकार होकर मूर्च्छा की स्थिति में भी पहुंच सकता है परन्तु उपचार के बाद स्वस्थ होने पर रोगी को यह सब कुछ याद नहीं रहता. पोटेशियम के अभाव से पेशियों में कमजोरी आ जाती है. कंकाल पेशियों पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है. आमाशय की पेशियों में आई कमजोरी के कारण छोटी आंत में अवरोध की स्थिति पैदा हो सकती है. ह्रदय पेशी में उत्पन्न दुर्बलता, ह्रदय को विस्तारित करती है और फलस्वरुप रक्तचाप गिरने लगता है. ऐसी स्थिति के लंबे समय तक बने रहने पर ह्रदय अपना काम करना बंद भी कर सकता है. श्वसन पेशियों में आई कमजोरी के कारण श्वसन केंद्र नि-क्रीय हो सकता है और फलस्वरुप व्यक्ति मौत का शिकार बन सकता है. पोटेशियम अभाव की स्थिति में गुर्दे मूत्र में पोटेशियम की सांद्रता बढ़ाने या घटाने में अक्षम हो जाते हैं. मूत्रतारोधी के हार्मोन भी गुर्दो की क्रियाशीलता को प्रभावित नहीं करते हैं. पोटेशियम अभाव से पीड़ित व्यक्ति को बार बार मूत्र त्यागना पड़ता है. अत्यधिक मूत्र निकलने के कारण शरीर में जलाभाव की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है और पीड़ित व्यक्ति को बार बार प्यास लगने लगती है. पोटेशियम अभाव से ग्रस्त व्यक्ति के शरीर में हाइड्रोजन आयन के अभाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है. पोटेशियम आधिक्य की स्थिति जिसमें पोटेशियम आयनों की अधिकता होती है शरीर के लिये घातक है. जब शरीर अपनी आवश्यकता से अधिक पोटेशियम को बाहर निकाल नहीं पाता है तब शरीर में पोटेशियम की मात्रा बढ़ने लगती है. पोटेशियम आधिक्य गुर्दे के विकार उत्पन्न हो जाने के कारण तथा रक्त में पोटेशियम की मात्रा एकाएक अधिक मात्रा पहुंचने के कारण होता है. कभी कभी कोशिकीय पोटेशियम के अचानक मुक्त होने के कारण पोटेशियम आधिक्य की स्थिति उत्पन्न होती है. पोटेशियम आधिक्य से ह्रदयपेशी पर अवर्तमन प्रभाव पड़ता है. फलस्वरुप ह्रदय धड़कने की दर कम और असामान्य हो जाती है. सीरम में पोटेशियम की सांद्रता प्रतिलीटर में सात मिलीलीटर अधिक हो जाती है तो ह्रदय गत्यावरोध हो जाता है. रक्त में पोटेशियम की सांद्रता को ज्वाला ज्योतिर्मापी की सहायता से आसानी से मापी जाती है. मनु-य के रक्त में सामान्यतः 3.5 से 5.5 मिली मोल पोटेशियम प्रतिलीटर होता है. पोटेशियम के आधिक्य अथवा अभाव की जानकारी इ.सी.जी. में हुए परिवर्तन से भी प्राप्त की जा सकी है. मुंह से कुछ ऐसे पदार्थ दिये जाते हैं जो आमाशय तथा छोटी आंत में पहुंचकर पोटेशियम का अधिशो-ण कर सकें. ग्लूकोज तथा इंसुलिन भी पोटेशियम आधिक्य को कम करने में सक्षम हैं. ये पोटेशियम को बाहय कोशिकीय प्रभग से अतःकोशिकीय प्रभाग में जाने के लिये प्रेरित करते हैं. पोटेशियम की कमी के कारण अपच, मंदाग्नि, कब्ज, वायु विकार उत्पन्न होते हैं. पोटेशियम शरीर के प्राकृतिक विकास के लिये बहुत ही अधिक आवश्यक है क्योंकि पोटेशियम के कारण पाचन बहुत ही सही ढंग से होता है और भूख बहुत ही तेज लगती है. गर्भ में पल रहे बच्चे को संपूर्ण विकास के लिये पोटेशियम की आवश्यकता 5 माह के बाद पड़ती है

कैल्शियम

कैल्शियम रक्त तथा मुलायम मांसपेशियों में होता है जो मांसपेशियों के सिकुडने एवं फैलने में सहायक होता है.

शरीर में रक्त शोधक का कार्य करता है जिसके कारण रक्त हमेशा सही रहता है. कैल्शियम रक्त को जमने से रोकता है. शरीर में हडियों के विकास के लिये कैल्शियम की महत्वपूर्ण भूमिका है.

कैल्शियम उत्तम रक्त स्कन्दन है. शरीर का वजन कैल्शियम के कारण पूरी तरह से नियंत्रित रहता है. बच्चों के विकास के लिये अधिक कैल्शियम की आवश्यकता होती है. कैल्शियम की कमी के कारण गर्भ में पल रहे बच्चे मानसिक विकलांगता का शिकार हो सकते हैं.

स्त्रियों को गर्भावस्था के अंतिम दो माहों में तथा स्तनपान कराने के काल में कैल्शियम की आवश्यकता विशेष रुप से होती है. 1200 से 1500 मिलीग्राम कैल्शियम की आवश्यकता गर्भ के अंतिम 2 माह में तथा स्तनपान करने के समय है.

कैल्शियम को मेग्नेशियम के साथ लेने पर उत्तेजना और अनिद्रा जैसी बीमारियों से बचाता है. कैल्शियम की कमी से बच्चों का विकास रुक जाता है. लेक्टोस, कैल्शियम तथा विटामिन डी का परस्पर संबंध शरीर द्वारा कैल्शियम का उपयोग करने में सहायक होता है. कैल्शियम वानस्पतिक मूल के खाद्यों में भी उचित मात्रा में पाये जाते हैं परन्तु शरीर द्वारा कैल्शियम का अवशोषण आसानी से नहीं हो पाता है.

मेगनेशियम

मेग्नेशियम रक्त कोशिकाओं के निर्माण में सहायता करता है. क्लोरोफल यानी ग्रीन ब्लड का न्यूक्लीयस मेग्नेशियम है. न्यूक्लीयस मेग्नेशियम होने के कारण क्लोरोफिल का रंग हरा होता है. मेग्नेशियम रक्त कोशिकाओं को पुनर्निर्माण एवं पुनर्जीवन देने के कारण संजीवनी का काम करता है.

मेग्नेशियम मांसपेशियों की क्रिया तथा तंत्रिका स्थायित्व में सहायता पहुंचाता है. शरीर में शोधक प्रभाव हेतु मेग्नेशियम आवश्यक है. किण्व तत्वों यानी पाचक रसों की क्रिया का प्रेरक है. मस्तिष्क की कमजोरी को समाप्त करता है. पाचन में सहायक होकर पाचन विकार नही होने देता है.

उत्तम कीटाणुनाशक है. हदय गति की तीव्रता से रक्षा करता है. शरीर की वृद्धि में सहायक है.

कोबाल्ट

कोबाल्ट का खून के निर्माण में तथा उनकी वृद्धि करने में विशेष योगदान होता है एवं खून द्वारा आक्सीजन अवचूषण में सहभागिता निभाता है.

खून के निर्माण में विटामिन बी-12 की खास उपयोगिता है. विटामिन बी-12 के निर्माण में कोबाल्ट अति महत्वपूर्ण आहार है. यही वजह है कि विटामिन बी-12 को कोबाल्टएमिन कहा जाता है. छोटी आंत में विटामिन बी-12 पैदा करने वाले बैक्टेरिया कोबाल्ट खाकर ही बैक्टेरियल प्रक्रिया द्वारा कोबाल्ट एमिन बनाते हैं.

तांबा

लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में तांबे का खास महत्व है. लाल रक्त कणिकाएं तांबे के बिना नहीं बन सकती हैं. तांबे की कमी से खून की कमी हो सकती है. तांबे से विटामिन सी, लोहा, जिंक को पचाने में मदद मिलती है. तांबा कई पाचक रसों में पाया जाता है. तांबा जहर के प्रभाव को कम करने के लिये तथा संक्रामक रोगों को रोकने के लिये महत्वपूर्ण है. तांबा वसा के ओक्सीकरण को उत्प्रेरित करती है. तांबा भी बहुत कम उपस्थित होता है. तांबे की आवश्यकता बहुत कम होती है. तांबे के अधिक प्रयोग से यकृत का डिजेनरेटिव रोग सिरोसिस हो जाता है.

लोहा

लोहा वसा के ओक्सीकरण को उत्प्रेरित करती है. लोहा रक्त में हिमोग्लोबिन के निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. लोहे के कारण रक्त की वद्धि होती है. लोहा संक्रमण वृद्धि, सुस्ती, कोशिका सम्बन्धी विकार, ह्रदय विकार, थकान, भारीपन, छाती के अंदर दर्द, घबराहट, अनिद्रा, सिरदर्द, सूजन आदि को रोकता है.

मेगनीज

यकृत, बालों, अग्नाशय यानी पैंक्रियाज के लिये मेगनीज आवश्यक है. खून के निर्माण में मेगनीज एक महत्वपूर्ण खनिज है. मेगनीज लोहे तथा फास्फोरस के कार्य एक दूसरे से संबंधित है तथा ये एक दूसरे पर आश्रित भी हैं. मेगनीज खून के साथ साथ उतकों को भी ताकत प्रदान कर शरीर को सुडौल और सुंदर बनाता है. मेगनीज थायरायड से निकलने वाले हार्मोन थायराक्सीन तथा लाल रक्त कणों के निर्माण में खास भूमिका निभाता है. रक्त निर्माण में सहायक विटामिन कोलिन तथा प्रोटीन के मेटाबोलिज्म को उन्नत करने के लिये विशेष प्रकार के पाचक रसों को क्रियाशील बनाता है. मेगनीज की कमी के

कारण इंसुलिन बनना प्रभावित होता है. मधुमेह के मरीजों को मेगनीज की आवश्यकता होती है. शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिये मेगनीज आवश्यक है.

क्रोमियम

क्रोमियम रक्त में ग्लूकोज के स्तर को बनाये रखता है तथा रक्त में वसा की मांग को सामान्य बनाये रखता है. क्रोमियम की कमी के कारण इंसुलिन बनना प्रभावित हो जाता है. मधुमेह के मरीजों को क्रोमियम की आवश्यकता इंसुलिन बनने के लिये होती है. मिर्गी के मरीजों को क्रोमियम की आवश्यकता होती है. क्रोमियम की आवश्यकता 2 मिलीग्राम होती है.

फास्फोरस

कंकाल एवं दांतों तथा शरीर के कुछ अन्य भागों में फास्फोरस 86 प्रतिशत होता है. फास्फोरस दांतों और हडिडयों के लिये आवश्यक है. फास्फोरस कोशिकाओं का भी बहुत उपयोगी घटक है. फास्फोरस एंजाइम को सक्रिय बनाये रखता है तथा रक्त का पी.एच. मान एक निश्चित स्तर पर रखने में भी मदद करता है.

क्लोरिन

आमाशयिक रस के स्त्राव में क्लोरिन सहायक है. पाचक रसों को क्रियाशील बनाता है इसलिये पाचन में सहायक है. जल धारण शक्ति का नाश नहीं होने देता है. शरीर भार में कमी नहीं होने देता है. पाचन विकार नहीं हो पाते हैं. रक्त तथा धातुओं के व्यापान भार का नियमन करता है. क्लोरीन की आवश्यकता 95 मिलीग्राम होती है.

आयोडिन

थायराइड ग्रंथि के स्त्राव का एक हिस्सा आयोडिन होता है. आयोडिन की पर्याप्त मात्रा के लिये थायराइड ग्रंथि की क्रियाशीलता ठीक होना आवश्यक है. आयोडिन की कमी से घेंघा होता है. आयोडन की कमी से बच्चों में मिक्सोडिमा रोग, महिलाओं में मासिक स्त्राव संबंधी बीमारियों, गलगंड रोग होता है. 13 मिलीग्राम आयोडीन की आवश्यकता होती है.

काली बछिया के मूत्र से तैयार घनवटी ज्यादा प्रभावशाली है.

जड़ीबूटी चरने वाली गाय के मूत्र में अधिक उर्जा है. घनवटी तैयार करने पर जल्दी निरोगी करती है.

गोमूत्र की तुलना में घन कम मात्रा में अधिक उर्जा प्रदान करता है. आकार में बहुत ही छोटी घनवटी के सेवन करने पर अदभुत उर्जा प्राप्त होती है.

साइड इफेक्ट नहीं

घनवटी में किसी भी प्रकार का साइड इफेक्ट नहीं है. साइड इफेक्ट नहीं होने के कारण ही विश्व में घनवटी को आश्चर्यजनक औ-धि के रुप में देखा गया है. सूर्य की समस्त शक्तियां घनवटी में मौजूद है.

चमत्कारिक परिणाम

अनुसंधान से यह स्प-ट है कि परहेज के साथ में धनवटी के नियमित सेवन करने के कारण ही कम समय में चमत्कारिक परिणाम मिलने के कारण ही अब रोगों के अनुसार ही घनवटी विभिन्न जड़ीबूटियों के साथ में तैयार की जा रही है.

निर्यात

सुनहरे अवसर

कामधेनु घनवटी के निर्यात के सुनहरे अवसर वर्तमान में भारत में मौजूद हैं.

मांग

प्राणधातक एडस, जानलेवा ह्रदय रोग, मासिक धर्म की अनियमितता, रक्तप्रदर, स्वेतप्रदर, बांझपन, गर्भपात, रसौली, खून की कमी जेसी अनेक महिला रोगों में, स्वप्न दो-ा, नपुंसकता, संभोग में कमी, वीर्य का पतलापन, कामुकता जैसी अनेक युवा बीमरियां, मधुमेह, विभिन्न प्रकारों के कैंसर, उच्च एवं निम्न रक्तचाप, कब्ज, मानसिक विकलांगता, लकवा, मिर्गी, स्मृतिनाश, आंखों की बीमारियां, कान की बीमारियां, हडडी की बीमारियां, चर्मरोग, यौन रोग, मोटापा जैसी अनेकों असाध्य एवं बहुत ही जटिल बीमारियों में कामधेनु धनवटी की सबसे अधिक मांग कैप्सूल तथा मूल स्वरुप में बहुत अच्छे मूल्य पर विकसित देशो में है.

इंटरनेट

इंटरनेट पर युवा अपनी वेबसाइट, ब्लोग, फेसबुक, यूटयूब के माध्यम से कामधेनु घनवटी के लिए विश्व की सभी भा-ाओं में अपना पक्ष रख सकता है.

विश्व बहुत ही उत्सुकता के साथ में भारत की ओर देख रहा है.

निःशुल्क प्रशिक्षण

भारत में वर्तमान में भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई, कपार्ट, गो सेवा आयोग के वित्तीय सहयोग से छोटी, मध्यम एवं बड़ी गोशालाओं में घनवटी बनाने का निःशुल्क प्रशिक्षण साल भर उपलब्ध है.

पंचगव्य डिप्लोमा

श्री निरंजन वर्मा जी ग्राम कटटावाक्ककम, तालुका तिनेरी, जिला कांचीपुरम, तमिलनाडू कार्यालय गव्य नेचर क्योर रिसर्च सेंटर सीयू शाह भवन 78-79 रिचर्डन रोड वेपेरी चेन्नई 600007 में वर्तमान में पंचगव्य पर 1 साल का डिप्लोमा दे रहे हैं. प्रशिक्षण में युवा बहुत ही रुचि के साथ में कामधेनु धनवटी को समझने का प्रयत्न कर रहे हैं. डिप्लोमा लेने के बाद में प्रतिमाह 30,000 रु. प्राप्त कर रहे हैं.

सबसे अधिक गोवंश

विश्व में सबसे अधिक गोवंश भारत में हैं. भारत से ही विश्व में सर्वश्रे-ठ गोवंश बहुत अच्छे मूल्य पर निर्यात किये गये हैं. भारत से कामधेनु घनवटी के निर्यात करने के लिए उज्जवल भवि-य है.

सबसे अधिक जड़ीबूटियां

विश्व में सबसे अधिक जड़ीबूटियां भारत में हैं. जड़ीबूटियां तथा जड़ीबूटियों से तैयार घनवटियां विश्व में बहुत अच्छे मूल्य पर निर्यात की जा रही हैं. आर्यवैद्यशाला कोटकल केरल 500 से अधिक आयुवेदिक औ-धियां 110 सालों से निर्यात कर रही है. नंदनी, सुरभि, कपिला, श्यामा नामों से भी घनवटियां बहुत लोकप्रिय हैं.

2015 तक विश्व को पूरी तरह से निरोगी करने के लिए जड़ीबूटियों वाली कामधेनु घनवटियां युवाओं के द्वारा भारत से ही निर्यात की जायेंगी.

प्रथम स्तर

स्वरोजगार

भारत में प्रत्येक गांव में पंचगव्य आचार्य के मार्गदर्शन में कम से कम 1 साल का संपूर्ण प्रशिक्षण ग्रहण कर सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ में कामधेनु अनुसंधान केंद्र स्थापित कर बहुत ही कम लागत लगाकर सरलता के साथ में गोमूत्र से जड़ीबूटियों के साथ में कामधेनु घनवटी तैयार करने पर 60 करोड़ युवाओं को स्वरोजगार मिलेगा.

लोकप्रिय

कामधेनु घनवटी अब कैप्सूल में अधिक लोकप्रिय है. रोमांचक नाम रखने पर लोग कैप्सूल लेने के लिए लालायित रहते हैं.

लाभ

कैप्सूल में गोमूत्र की गंध भी नहीं आती है. सेवन करने में कोई कठिनाई नहीं होती है. कैप्सूल बहुत अच्छे मूल्य पर बिक रहा है.

लागत

कामधेनु घनवटी की एक किलो की निर्माण की लागत मात्र 28 से 50 रु. तक ही है. कैप्सूल तैयार करने पर भी लागत कम है.

प्रचार प्रसार

आरम्भ में कामधेनु घनवटी के प्रचार प्रसार करने के लिए पर्याप्त राशि मिल जाती है.

1000 किलो

प्रथम स्तर पर कम से कम 100 किलो प्रतिमाह तथा अधिकतम 1000 किलो तक युवा अपने निवास में भी बहुत ही कम मूल्य पर नमूने के रुप में प्रयोग करने के लिए देने के लिए कामधेनु घनवटी तैयार कर सकता है.

सावधानी

कामधेनु घनवटी बनाने के लिए देशी गोवंश ही अनिवार्य है. नियमित जड़ीबूटियां खाने वाले गोवंश का मूत्र गाढ़े बैंगनी रंग का होता है जो देखने में काला दिखता है. काली बछिया में विशे-ा उर्जा होती है. काली बछिया का मूत्र कामधेनु घनवटी बनाने के लिए प्राथमिकता के आधार पर लेना चाहिए.

गोवंश को सूर्य का प्रकाश तथा पवित्र हवा मिलनी चाहिए. वातावरण में शांति रहनी चाहिए. गोचर की भूमि में कम से कम 2 किलोमीटर प्रतिदिन घूमना आवश्यक है.

गोवंश को बहुत ही सावधानी से साफ सफाई के साथ में रखना है. बीमार गोवंश के मूत्र का प्रयोग दवा के लिए नहीं करना है. गोवंश को प्रतिदिन जैविक चारा तथा स्वच्छ जल का सेवन करवाना है.

द्वितीय स्तर

निःशुल्क प्रशिक्षण केंद्र

भारतीय जीवजन्तु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से घनवटी बनाने का प्रशिक्षण युवाओं को गांव गांव में निःशुल्क देना संभव है.

अनुसंधान केंद्र

कामधेनु धनवटी के परिणाम असाध्य रोगों में देखने के लिए बहुत ही छोटी गोशालाओं में भी आधुनिक सुविधाओं के साथ में अनुसंधान केंद्र प्रारम्भ कर मरीज को भरती कर गहन जांच करने के लिए अस्पताल चाहिए.

10,000 किलो

प्रतिमाह कम से कम 1000 किलो तथा अधिकतम 10,000 किलो तक घनवटी तैयार की जा सकती है.

तृतीय स्तर

स्वामी रामदेवजी

कामधेनु घनवटी के भारत के सभी गांवों में वितरण करने के लिए बड़े वाहनों में स्वामी रामदेवजी के निःशुल्क योग शिक्षकों से संपर्क किया जा सकता है.

अखिल विश्व गायत्री परिवार

भारत में कामधेनु धनवटी के वितरण करने के लिए विश्व का सबसे बड़ा संगठन अखिल विश्व गायत्री परिवार है. वर्तमान में अखिल विश्व गायत्री परिवार गांव गांव में सबसे सक्रिय संगठन है.

50,000 किलो

मध्यम गोशालाओं में वर्तमान में प्रतिमाह कम से कम 10,000 किलो एवं अधिकतम 50,000 किलो तक निर्यात करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाली घनवटी तैयार की जा सकती है.

चतुर्थ स्तर

अनुसंधान केंद्र

कामधेनु धनवटी के परिणामों को देखने के लिए चिकित्सकों के द्वारा गिने चुने मरीजों को गोशाला में ही भरती कर असाध्य रोगों के गहन जांच करने के लिए आधुनिक सुविधाओं के साथ में अनुसंधान केंद्र प्रारम्भ करें.

1 लाख किलो

बड़ी गोशालाओं में प्रतिमाह कम से कम 50,000 किलो तक तथा अधिकतम 1 लाख किलो तक उच्च गुणवत्ता वाली घनवटी तैयार की जा सकती है.

पंचम स्तर

10 लाख किलो

महानगर में निर्यात के लिए प्रतिमाह कम से कम 1 लाख किलो तथा अधिकतम 10 लाख किलो तक उच्च गुणवत्ता वाली घनवटी तैयार की जा सकती है.

अधिक जानकारी के लिए श्रीमती कमला आशर, अखिल विश्व कामधेनु परिवार, जयराज कोम्प्लेक्स, सोनी नी चाली, ओढव मार्ग, अहमदाबाद 382415 मोबाइल 9662407242 पर संपर्क करें.